अध्ययन 1

यीशु के कार्य

यीशु कौन था ?

– यदि यीशु वही था जो उसने दावा किया, तो वह सब से अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति था जो इस दुनिया में रहा, उसने परमेश्वर के पुत्र होने का दावा किया और यह भी कि वह सृष्टि कर्त्ता तथा महान राजा है सम्पूर्ण जगत का जो समस्त मानव जाति का उद्धार करने के लिये इस संसार में आया।

– यदि यीशु वह नहीं था जो उसने दावा किया तो वह या तो पागल था या आत्म विश्वास वाला व्यक्ति। इसका अर्थ यह होगा पूरे इतिहास में लाखों लोगों को मूर्ख बनाया गया तथा अपने जीवनों को वे झूठी बातों के लिये अर्पण कर दिये हैं। फिर भी इस व्यक्ति के द्वारा इतिहास में एक बड़ा परिवर्तन आया है और आज विश्व की जनसंख्या का एक इतिहास भाग (लोग) उसके पीछे हो लिये हैं। लाखों लोग दावा करते हैं कि वे उस को व्यक्तिगत रीती से जानतें हैं और अपना जीवन उसकी आगुवाई में तथा निर्देश के अनुसार व्यतीत करते हैं। यदि वह झूठा था या पागल था तो वह अत्यन्त प्रभावी था।

– यदि यीशु वही है जो कुछ वह दावा करता है और वह मारा गया, मृतकों में से जो उठा तथा अपने पिता के साथ रहने के लिये स्वर्ग चला गया, तब वह आज भी जीवित है और हम उसको स्वीकार नहीं करते, बस सन्देह करते है।

क्या वह आप का एक महत्वपूर्ण अंग हो सकता है? जिससे आप आपने जीवन से वंचित हैं?
क्या वह एक ऐसा चित्रखण्ड है जो सभी दूसरे टुकड़े को अर्थपूर्ण बनाता है?

यीशु ने हमारे लिये क्या किया ?

वह इसलिये आया कि :-

1) हमें न्याय से छुटकारा देने के लिये

"मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों 9:27)

एक व्यक्ति के लिये शारीरिक रुप से मृत्यु सब से बड़ी भय की बात नहीं है। आत्मिक रुप से मृत्यु का भयंकर रुप दर्शाया गया है। इस का अर्थ है प्रेमी परमेश्वर से पूर्णतः अनन्त काल का अलगाव। परमेश्वर के न्याय का आत्मिक मृत्यु हमारे पापों को अपने उपर ले लिया और हमारे बदले में अपराधी गिना गया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह आने वाले न्याय से भयभीत न हो।

2) हमें परमेश्वर का प्रेम दिखाने के लिये

"प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है, कि उस ने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा " (यूहन्ना 4:10)

हम में से प्रत्येक के लिये परमेश्वर का प्रेम मनुष्य की समझ से परे हैं। यह मात्र मित्रता नहीं, अनुराग अथवा वफादारी ही नहीं, दो मानव के बीच गहरा प्रेम भी नहीं। परन्तु यह प्रेम 'आगापे' परमेश्वर का त्यागपूर्ण प्रेम है जो अपनी सृष्टि(मनुष्य) को बचाने के लिए अपने आप को दे दिया।

3) अपराधों की क्षमा को सम्भव बनाने के लिये

"हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपराधों की क्षमा............. मिला है।" (इफिसियों 1:7)

पाप का दोष मनुष्य जाति के लिये व्यापक समस्या है। अकसर हम अनुभव करते हैं कि हम दोषी हैं पर यह नहीं जानते किस बात के लिये। सत्य बात तो यह है कि हमारे पापों ने हमें परमेश्वर से अलग कर दिया है और हमारे अन्तरात्मा को विच्छेदित कर दिया है और यही कारण है कि हम दोषी अनुभव करते हैं। परन्तु यीशु मसीह ने हमारे बदले में यह दोष अपने उपर ले लिया और हम उस पर भरोसा रख सब अपराधों से क्षमा पा सकते हैं जो कुछ हम परमेश्वर के विरोध में किया है। तब हम आगे को परमेश्वर से अलग किया हुआ नहीं रहेंगे तथा दोष–मुक्त हो जाएंगे।

4) हमें परमेश्वर के पास वापस लाने के लिए

> *"मसीह ने भी अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए "* (1 पतरस 3:18)

मनुष्य परदेशी है, अपने ही ग्रह में खोया हुआ। उनके उपद्रव एवं अभिमान ने उन्हें उसके सृजन हार से अलग कर दिया है। उसने अपने घर *का* तथा वापस जाने का मार्ग खो दिया है।यीशु मसीह खोए हुओं को ढूढ़ने और उनका उद्धार करने आया तथा अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग तैयार किया ।

5) परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ को सौंपने के लिये

> *"वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया......उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।"* (1 पतरस 2:24)

बीमारी और पीड़ा परमेश्वर के मौलिक योजना में पहले नहीं था मनुष्य के लिये नहीं था। नहीं उस के भविष्य के योजनाओं में होगें। (देखें प्रकाशित 21:4) आज आप परमेश्वर के चंगाई तथा छुटकारा देने वाली सामर्थ को जान सकते हैं। क्रूस के उपर यीशु ने हमारे दुखों एवं पीड़ाओं को अपना लिया तथा हमें पाप की सामर्थ और बीमारी के प्रभाव से छुड़ा लिया।

6) दुष्ट की शक्ति को पराजित करने के लिये

> *"उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने उपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय–जय–कार की ध्वनि सुनाई ।"* (कुलुस्सियों 2:15)

अन्धकार की सामर्थ मनुष्य को पूरी तरह निगल देने की धमकी देता है। शैतान (दुष्ट) जो अन्धकार का राजा है लोगों को अन्धा बनाने की कोशिश करता है ताकि लोग परमेश्वर को नहीं जान सकें। परन्तु यीशु ने क्रूस पर हरेक दुष्ट की शक्ति तथा शैतान की सामर्थ को आप ही साम्हना किया और अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान के द्वारा पूर्ण रुप से उन्हें हरा दिया।

7) हमें मृत्यु से बचाने के लिये

> *"ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे उन्हें छुड़ा ले।"* (इब्रानियों 2:14,15)

मृत्यु एक भयानक बात है क्योंकि यह एक अन्त है, दार्शनिक अरस्तु ने कहा हैं। परन्तु भयानक कटनी का भय मसीही लोगों में असर नहीं करता क्योंकि उनका विश्वास यीशु मसीह पर है जिसने मृत्यु सह ली तथा इसकी शक्ति को तोड़ डाला अपनी पुनरुत्थान के द्वारा।

8) हमें पुनरुत्थान की सामर्थ देनें के लिये

> *"यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गये हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।"*
> (रोमियों 6:5)

इसका अर्थ यह नहीं कि हमें परमेश्वर का पुनरुत्थान का अनुभव करने के लिये मृत्यु के बाद तक ठहरना पड़ेगा बल्कि इसी समय हम इसको जान सकते हैं। परमेश्वर की सामर्थ के बिना हम आत्मिक रुप से (दुर्बल) शक्तिहीन है। हर दिन जो परिस्थितियाँ हमारे सामने आती हैं

उन्हें अपने से प्रबन्ध करने की शक्ति हम में नहीं है। परमेश्वर हमारे जीवन में वही सामर्थ देना चाहते हैं जिसके द्वारा उसने यीशु मसीह को मृतकों में से जिला दिया। (देखिए इफिसियों 1:18–23)

प्रार्थना :–

हे सर्व–शक्तिमान परमेश्वर, ऐसा लगता है यीशु मसीह ने मेरे लिये बहुत कुछ किया है। यदि सचमुच यीशु परमेश्वर का पुत्र है और जगत का उद्धार कर्त्ता है तो मैं उसे व्यक्तिगत रुप से जानना चाहता हूँ। मेरी आँखे खोलिए तथा सच्चाई मुझे दिखला दीजिए। यह प्रार्थना मैं यीशु के नाम से करता हूँ। आमीन।